आयुर्वेद महावीर

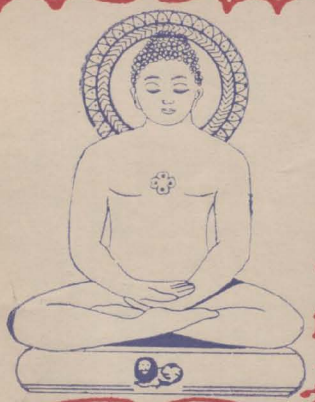

लेखक—

नेमीचन्द पुगलिया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नाम— स्तंभनक पार्श्वनाथ स्तोत्र

विषय—मंत्र औषधिगर्भित प्रभु स्तुतिः

भाषा—प्राकृत

कर्त्ता—श्री जिनदत्त सूरि (बड़े दादागुरुदेव)

रचनाकाल—१२वीं शताब्दी

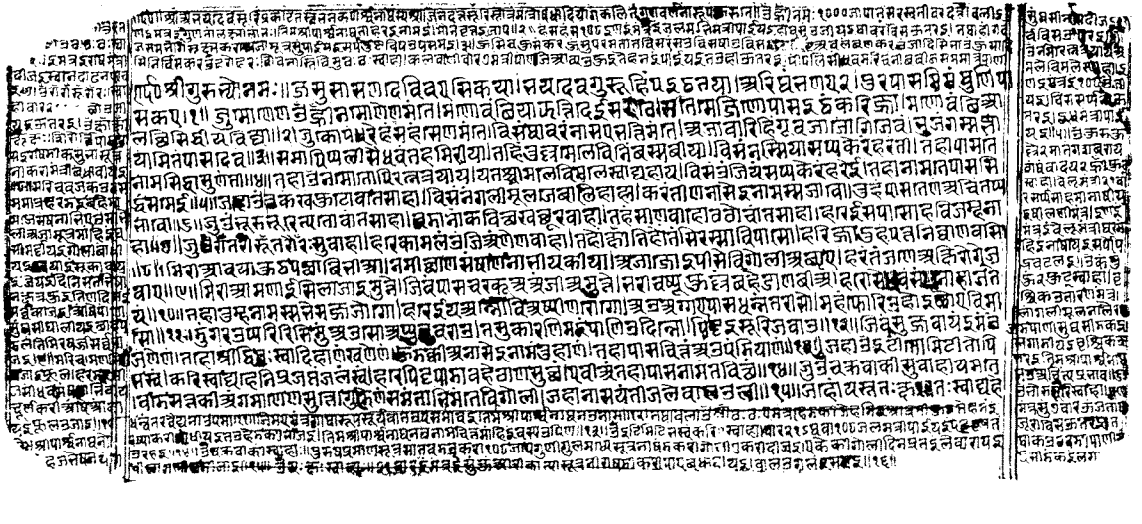

Jain Educationa International
For Personal and Private Use Only
www.jainelibrary.org

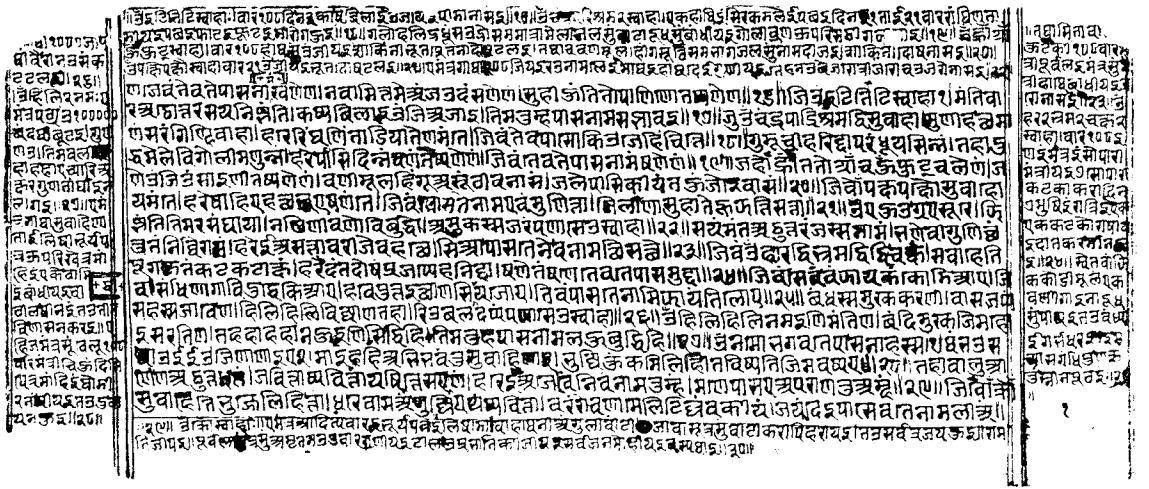

मूलपत्राकृति—१०" × ४½"

ब्लॉकाकृति—६" × ३"

लेखनशैली—पंचपाठ

टिप्पण भाषा—राजस्थानी

लेखनकाल—१७वीं शताब्दी

प्राप्ति सौजन्य—पुगलिया पुस्तकालय

Jain Educational International
For Personal and Private Use Only
www.jainelibrary.org

भगवान महावीर की पचीसवीं निर्वाण-शताब्दी

के

अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव

पर

आयुर्वेद - महावीर

लेखक

नेमीचन्द पुगलिया

प्रेरक

डा० भंवरलाल नाहटा

निर्देशक

वैद्य प्यारे यति

वैद्य लक्ष्मी चन्द्र यति

प्रकाशक

उषा एवं मीना

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पुस्तक का नाम — आयुर्वेद महावीर

प्रकाशक — उषा एवं मीना

प्रथम बार — १००० (संवत् २०३१)

मूल्य — १=५० (प्रतिशत — १२५=००)

© — लेखकाधीन

लेखक — नेमीचन्द पुगलिया

आमुख — वैद्य सोहन लाल शर्मा

निर्देशक — वैद्य प्यारे यति
वैद्य लक्ष्मीचन्द्र यति

प्रेरक — डा० भंवरलाल नाहटा

मुद्रक — एजूकेशनल प्रेस, फड़ बाजार, बीकानेर

प्राप्ति स्थान—(१) श्री रेखचंद जी बैद, पापड़ वाले
दांती बाजार, बीकानेर
(२) ज्योति मेडीकल स्टोर, भुजिया बाजार, बीकानेर
(३) जेठमल जयकुमार पुगलिया,
सुनारों की गली, ठठेरों की गुवाड़, बीकानेर

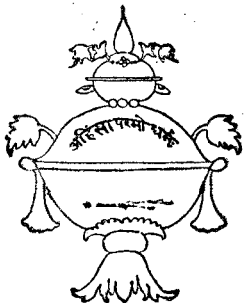

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आमुख

श्री नेमीचन्द जी पुगलिया बीकानेर निवासी द्वारा सरल सुबोध-गम्य पद्यों में रचित "आयुर्वेद महावीर" पुस्तक को देखने का अवसर मिला। पद्य की प्रथम पंक्ति में सरल हिन्दी में औषध का गुणधर्म वर्णन है तथा दूसरी पक्ति में श्री महावीर भगवान को स्मरण रखने का वर्णन है। लेखक का मुख्य उद्देश्य सरल चिकित्सा ज्ञान व श्री महावीर भगवान का स्मरण रखना है।

श्री पुगलिया जी ने इसके अतिरिक्त अनेक पुस्तकें और भी लिखी हैं। ये जिस लगन व निष्ठा से समाज सेवा करते आ रहे हैं उसे भुलाया नहीं जा सकता। समाज से सम्बन्धित सभी व्यक्तियों के बीच श्री पुगलिया जी विशेष लोकप्रिय हैं और सभी से आपका मधुर सम्पर्क है।

आपका परिश्रम व प्रयास सराहनीय है।

—सोहनलाल शर्मा वैद्य
जिला आयुर्वेद अधिकारी
बीकानेर

दिनांक २४-७-७४

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अपनी बात

औषधि और मंत्रों के चमत्कारों से जन मानस शीघ्र प्रभावित होता है। एतद् विषयक विधिवेत्ताओं के दर्शन सर्व सुलभ नहीं, महान दुर्लभ हैं। मंत्र और औषधियों के विधि-विधानों की गोपनीयता मानने वाले युग में श्री दादा गुरुदेव ने सर्वजन हिताय मंत्रौषधिगर्भित 'स्तंभनक पार्श्वनाथ स्तोत्र' की रचना की।

स्तोत्रान्तर्गत पचीसवीं गाथा का टिप्पण कहता है—"श्वेत वांझि-कंकोडीमूल एक वर्णी गाइना दूध सूं पियइ तउ वंध्याइ गर्भ धरइ इम आसगंधि पुण ऋतुस्नान पूठइं।"

तीसवीं गाथा का टिप्पण पढ़िए—ॐ क्रौं स्वाहाः ।। ए मंत्र आदित्य वारइं भूर्यपत्रइं लिखी डावा हाथ नी अंगुली वींटी जीवा सूत्र सूं वींटी करी पिहरायइ तउ सर्वत्र जय हुइ। रामति जीपइ। पूर्वला मंत्र सूं अमृतनउं ७ वार गुणीयइ टीलउ प्रभाति कीजियइ सर्वजन मोहीयइ वस्य थाइ ।।

विश्वास और सविधि सेवना आराधना के बिना औषधि, मंत्र और प्रभु की भक्ति ने किसे भी लाभ पहुँचाया हो, ऐसा ज्ञात नहीं है।

मंत्र और औषधि विज्ञान के साथ धर्म और भक्ति को विलुप्त होने के दुर्दिनों का कहीं सामना न करना पड़े, अतः पुरातन पद्धति पर इस छोटी-सी नव्य कृति का निर्माण किया है।

बीकानेर
२१-७-७४

नेमीचन्द पुगलिया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

卐 मंगलाचरण 卐

अतुलनीय को तोलना, दुस्साहस है एक
क्षमा करो श्री वीर जिन !, मेरा यह अविवेक १
इस मिष से जिन भक्ति का, पुष्ट बनेगा अंग
मैंने अति प्राचीनतम, अपनाया है ढंग २
श्री दादा गुरुदेव कृत—प्राकृत स्तोत्र प्रमाण
सुरभिगन्ध से तृप्ति का, अनुभव करते घ्राण ३
आतम भवन स्थित वीर जिन !, भक्ति कीजिए पुष्ट
नेमिचन्द्र की लेखिनी, बन जाये संतुष्ट ४

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लाभप्रदा अतिसार में, जैसे **वटी कपूर**
महावीर की भक्ति से, मिलता लाभ जरूर १
पाकर **अर्शकुठार रस,** अर्श छोड़ता स्पर्श
प्रभु ने हिंसा से किया, बहुत बड़ा संघर्ष २
अमर सुन्दरी कर रही, अपस्मार पर मार
अन्ध रूढ़ियों पर किया, प्रभु ने प्रबल प्रहार ३
करता **अग्निकुमार रस,** पाचन क्रिया सुधार
प्रभु की पूजा खोलती, ऋद्धि सिद्धि का द्वार ४
चर्मरोग उपशांति हित, लेते **खदिरारिष्ट**
महावीर के नाम से, होते नष्ट अरिष्ट ५
हट जाती है अश्मरी, खा **केले का क्षार**
लिए समन्वय के सुनो, सात्विक वीर-विचार ६
यथा मिटाता आफरा, चूरण **पंचसकार**
महावीर प्रभु ने किया, प्रथम विनय स्वीकार ७
यथा **सर्पगंधावटी,** मिटा रही उन्माद
अनेकान्त से मिट रहे, धार्मिक वाद-विवाद ८
हरता **नित्यानन्द रस,** कण्ठमाल का कष्ट
प्रभु का सहजानन्द रस, स्फूर्ति दे रहा स्पष्ट ९
रक्तशोधकारिष्ट से, मिट जाता ज्यों कुष्ठ
प्रभु सेवा से क्यों नहीं, आत्मा हो संतुष्ट १०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्वर - पीड़ित जन ले रहे, **महासुदर्शन** चूर्ण
भवपीड़ित भजते यहां, प्रभु सेवा संपूर्ण ११
जैसे **पारदभस्म** से, मिट जाता उपदंश
होता प्रभु के नाम से, मिथ्याभ्रम का ध्वंस १२
दद्रुदमन मलहम यथा, करती दद्रु - विनाश
क्षुद्र उपद्रव उठ नहीं, सकते प्रभु के पास १३
केवल **केलाहार** से, मिटता भस्मक रोग
करता प्रभु की भक्ति का, साधक सत्य प्रयोग १४
देते **त्रिभुवनकीर्त्ति रस,** जब हो मातृ-प्रकोप
महावीर का भक्ति रस, करता कोप-विलोप १५
मेदोवृद्धि मिटा रहा, ज्यों **मेदोहर अर्क**
मर्यादित जीवन जियो, यही वीर का तर्क १६
मधुमेहान्तक दे रहा, मधुमेही को शांति
शांतिस्थापना के लिए, की थी प्रभु ने क्रांति १७
करता निद्रानाश पर, **नित्योदय रस** काम
वैसे ज्ञान विनाश पर, महावीर का नाम १८
करती **पिष्टिप्रवाल** की, रक्त-पित्त का नाश
प्रभु कहते पहले करो, अपने पर विश्वास १९
विषविकार हरता यथा, **घृत** का **पय** का पान
भवविकार हरता तुरत, महावीर का ज्ञान २०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तिल्ली तेल लगाइए, अगर जला दे आग
भोग जलाने जब लगे, अपना लेना त्याग २१
इच्छा भेदी रस लिए, मिट जाता आनाह
प्रभु पूजा का प्रण लिए, मिट जाता भवदाह २२
जयमंगल रस शत्रु है, आमवात का खास
परममित्र प्रभु वीर पर, कर रे मन ! विश्वास २३
कास मिटाने के लिए, चूरण है **वासादि**
महावीर प्रभु ने कहा, नहीं जगत की आदि २४
कृमिनाशक माना गया, चूरण **वायविडंग**
भ्रमनाशक माना यहां, प्रभुवर ने सत्संग २५
अरुचि मिटाने के लिए, **शंखवटी** तैयार
द्वेष मिटाने के लिए, बनिए आप उदार २६
दूर कर रही पीलिया, यथा **भस्ममंडूर**
सही परिस्थिति को किया, प्रभुवर ने मंजूर २७
मिलती **रससिन्दूर** से, जीर्णज्वर में शांति
मिलती प्रभु की भक्ति से, बहुत बड़ी विश्रान्ति २८
टिका राजयक्ष्मा नहीं, **पंचामृत** के पास
भाग्य और पुरुषार्थ का, सधता साथ विकास २९
यवक्षार से हट रहा, मूत्रकृछ्र का रोग
दुःख हेतु माने गए, ये संयोग-वियोग ३०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्तम **मुक्तापिष्टि** से, चक्कर होते दूर
प्रभु की करुणा-वृष्टि से, उगता ज्ञान जरूर ३१
मिटता रोग प्रमेह का, **चन्द्रप्रभा** से सद्य
कटता बंधन स्नेह का, पढकर प्रभु के पद्य ३२
यथा **अग्नितुंडी** वटी, करती अग्नि प्रदीप्त
आत्मा को सज्ज्ञान से, करते रहिये तृप्त ३३
होती **त्रिफलाचूर्ण** से, नेत्रव्याधियां शान्त
दिशाबोध प्रभु ने दिया, रहा न मन उद्भ्रान्त ३४
गंधकघृत से मिट रही, जैसे खुजली खाज
प्रभु प्रवचन से उठ रही, सत्यभरी आवाज ३५
ब्राह्मीघृत से हो रही, स्मरण-शक्ति परिपुष्ट
प्रभु प्रवचन से हो रही, चरणभक्ति परिपुष्ट ३६
प्रतिश्याय का शत्रु है, **रसभैरव आनन्द**
महावीर प्रभु ने कहा, गति अवरोधक द्वन्द्व ३७
मकरध्वज पुरुषत्व की, औषधि यहाँ प्रधान
महावीर पुरुषार्थ को, देते पहला स्थान ३८
गर्भवती स्त्री का गिना, **गर्भपाल** को मित्र
महावीर प्रभु ने दिया, स्त्री को स्थान पवित्र ३९
क्षुधा जगाती आ रही, **पीपल** पय के साथ
जगती जिज्ञासा नई, कर प्रभु का साक्षात ४०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मोर पिच्छि की भस्म से, हिक्का होती बन्द
ऐच्छिक धर्माचरण से, मिलता सहजानन्द ४१
गुटिका **मृतसंजीवनी,** हरती म्यादी ताव
अमृतवाणी वीर की, भरती मन के घाव ४२
बलवर्धक माना गया, **द्राक्षासव** का पान
महावीर के तीर्थ हैं, सुखवर्धक संस्थान ४३
अन्त प्रदर का कर रहा, यथा **अशोकारिष्ट**
महावीर प्रभु को रहा, अन्त मोह का इष्ट ४४
यहां **चन्दनासव** यथा, हरता मूत्रविकार
महावीर की वन्दना, करती बेड़ा पार ४५
च्यवनप्राश से हो रहा, जैसे कायाकल्प
महावीर जिनकल्प का, कहते लाभ अनल्प ४६
कान्ति बढ़ाने के लिए, **स्वर्णभस्म** तैयार
शान्ति बढ़ाने के लिए, हुआ वीर अवतार ४७
वातगजांकुशरस यथा, हरता पक्षाघात
महावीर करते नहीं, पक्षपात की बात ४८
लोकनाथरस से नहीं, रह सकता स्वरभेद
महावीर प्रभु ने किया, भेदों का उच्छेद ४९
माना **भास्करलवण** को, अग्निमान्द्यहर चूर्ण
प्रभु ने प्रवचन श्रवण को, माना सुखकर पूर्ण ५०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गर्भावस्था में सुखद, कहा **सुपारीपाक**
सर्वावस्था में सुखद, माना पुण्य-विपाक ५१
बाल बढ़ाने लिए, **भृंगराज का तैल**
शक्ति बढ़ाने के लिए, रहते वीर अचेल ५२
वात मिटाने के लिए, है **नारायण तेल**
साथ जुटाने के लिए, रहते सन्त सचेल ५३
दमा दिखाता दीनता, **कनकासव** के पास
महावीर प्रभु को नहीं, देखा कभी उदास ५४
वातशूल नाशक यथा, है **हिंग्वाष्टक** चूर्ण
जन्ममूल नाशक तथा, प्रभु पूजाष्टक पूर्ण ५५
चूरण **सितोपलादि** से, मिटता यहां जुकाम
प्रभु सेवा भावादि से, नहीं सताता काम ५६
मिलती **अभ्रक भस्म** से, ज्ञानतंतु को शक्ति
लिए मुक्ति के कीजिए, महावीर की भक्ति ५७
करती **भस्मकपर्पटिका,** अम्लपित्त का नाश
पूर्व जन्म पर वीर का, था पूरा विश्वास ५८
पुंसकत्व देती यहां, जैसे **भस्मत्रिबंग**
चढ़ा हुआ था वीर पर, अलिंगता का रंग ५९
शक्ति मानसिक दे रही, **कामदुधा** ज्यों शुद्ध
होती है वीरार्चना, दुर्बलता पर क्रुद्ध ६०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नागभस्म दिखला रही, अस्थिभंग पर रंग
दिखलाता प्रभु को नहीं, अपना रंग अनंग ६१
रक्तस्राव को रोकती, जैसे **भस्मअकीक**
धर्मस्राव को रोकती, महावीर की सीख ६२
लेता यहां जलोदरी, उत्तम **रस क्रव्याद**
देता तप ऊनोदरी, ऊरोगता का स्वाद ६३
रस **आरोग्यविवर्धिनी,** हरता यहां त्रिदोष
सर्वदोषहर वीर का, संयममय उद्घोष ६४
क्या न **कुमार्यासव** कभी, हरता अन्त्र विकार
महामंत्र नवकार में, चौदह पूर्वी सार ६५
फलघृत से मिटता यहां, नारी का वंध्यत्व
लिए मुक्ति के योग्यता, देता है भव्यत्व ६६
हरती **शिशुसंजीवनी,** शिशुओं की हर व्याधि
हरती प्रभु की जीवनी, जीवन की असमाधि ६७
चन्द्रकलारस जीतता, रक्तवमन से युद्ध
चर्चा में वह हारता, जो हो जाए क्रुद्ध ६८
रक्षा करता गर्भ की, **गर्भपालरस** नित्य
रक्षा करना जीव की, अपना पहला कृत्य ६९
कासकेसरीरस बिना, कास न होता नाश
बिना बेदना धर्म पर, कब जमता विश्वास ७०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लोहपर्पटी ले रहे, अगर आम अतिसार
महावीर प्रभु ने प्रथम, जीते मनोविकार ७१
स्मृतिसागररस दे रहे, जब होता स्मृतिभ्रंश
आत्माओं में सदृश हैं, चेतनता के अंश ७२
मिट जाता मोतीझरा, कर **मृत्युञ्जय प्राप्त**
महावीर मृत्युञ्जयी, हैं उपदेष्टा आप्त ७३
पुनर्नवामंडूर से, रुकती प्लीहावृद्धि
महावीर के चरण में, झुकती सारी ऋद्धि ७४
कफसंचय हरता यहां, यथा **मल्लसिन्दूर**
रहता है धन संचयी, श्रमणसंघ से दूर ७५
गोक्षुरादि गुग्गुल यहां, हरता मूत्राघात
शासनप्रेमी शिष्य कब, सहता सूत्राघात ७६
मिटता **तालीसादि** से, सास कास का कष्ट
चलता काल अनादि से, क्रम क्यों होगा नष्ट ७७
स्त्रियां प्रसूता ले रही, वर **दशमूलारिष्ट**
धर्म क्रियाएं दे रही, आत्मिक-शक्ति विशिष्ट ७८
ज्यों **चन्द्रोदयवर्तिका**, हरती नेत्र विकार
महावीर की कीर्त्तना, करती बेड़ापार ७९
हरता हृद्दौर्बल्य ज्यों, यहां **अर्जुनारिष्ट**
दुर्बलता के कक्ष में, होते प्रभु न प्रविष्ट ८०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कल्याणकघृत से यहां, मिटता भूतोन्माद
कल्याणक से वीर की, होती ताजा याद ८१
यहां **कांगणी तैल** से, मिटता वात विकार
निर्विकारिता को करो, जीवन में स्वीकार ८२
ज्यों रहने देता नहीं, **पुननर्वासव** शोथ
महावीर प्रभु ने किया, नूतन धर्मोद्योत ८३
क्षारतैल से बधिरता, रहती नित भयभीत
महावीर के सामने, मार न पाता जीत ८४
सार्षपरिला से यहां, मिटता रक्त विकार
महावीर प्रभु चाहते, आत्मा पर अधिकार ८५
मूत्रदाह बहुमूत्र पर, **लोध्रासव** है पेय
होता है आदेय ही, सर्वकाल में श्रेय ८६
संधिशिथिलता के लिए, उत्तम **लहशुनपाक**
नहीं शिथिलता चाहते, भवसागर तैराक ८७
शिशु रोगों पर है नहीं, **अरविन्दासव** व्यर्थ
सच्चा और समर्थ है, सूत्र-सूत्र का अर्थ ८८
हितकर आहारान्त में, **द्राक्षासव** का पान
अतिहितकर प्राणान्त में, महावीर का ध्यान ८९
शांति दिमागी दे रहा, यहां **तैल बादाम**
शांति-प्रेम-सुख दे रहा, महावीर का नाम ९०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दर्द मिटाता दांत का, जैसे **तैल लवंग**
पाठ पढ़ाते शांति का, उत्तम ग्यारह अंग ९१
कर्पूरासव कर रहा, विसूचिका का नाश
प्रभु जाने से रोकते, विपदाओं के पास ९२
वमन रोकने के लिए, चूरण है **एलादि**
महावीर प्रभु मानते, आत्मा तत्त्व अनादि ९३
करती **मलहम व्यूचिहर**, विचर्चिका का नाश
प्रभु प्रभु प्रभु प्रभु बोलता, महावीर का दास ९४
निकट न **जातिफलादि** के, संग्रहणी का वास
निकट न त्यागी पुरुष के, रहते भोग-विलास ९५
हो जाता **कुटजादि** से, पेचिस का प्राणान्त
कार्मण के देहान्त को, माना गया भवान्त ९६
उत्तम **रस योगेन्द्र** से, भगा भगन्दर आप
महावीर योगेन्द्र से, डरते सारे पाप ९७
कर्ण रोग हरता यहां, शुद्ध **तैल बिल्वादि**
महावीर प्रभु मानते, दृढ़ बन्धन स्नेहादि ९८
मानो **इरिमेदादि** से, मिटती मुख दुर्गन्ध
महावीर प्रभु मानते, परिणामों से बन्ध ९९
कस्तूरीभैरव नहीं, सन्निपात का मित्र
मित्र कौन किसका यहां, स्थितियाँ बड़ी विचित्र १००

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्मतियां

सुश्रावक कवि श्री नेमीचन्द जी पुगलिया के लेखन और संपादन से मैं जितना प्रभावित हूं उससे अधिक उनके मधुर और सरल व्यवहार से प्रभावित हूं।

आपकी होमियो महावीर, आयुर्वेद महावीर, प्राकृतिक महावीर और ज्योषित महावीर नाम की चारों पुस्तकें नूतन शैली के साथ उपयोगी होते हुए भगवान महावीर के प्रति आंतरिक भक्ति का अनुपम उदाहरण है।

मैं आशा कर सकता हूं कि कवि श्री पुगलिया जी की कृतियां आरोग्य और बोधिलाभ देने वाली सिद्ध हों।

उपप्रवर्त्तक, कविरत्न
चन्दन मुनि (पंजाबी)

कवि श्री नेमीचन्द जी पुगलिया कृत प्रस्तुत रचना को देखा, पढ़ा। पुरातन रचना-पद्धति को पुनरुज्जीवित करने वाली यह रचना वर्तमान-युग को आकर्षित करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रस्तुत पुस्तक नव्य और भव्य होने के साथ-साथ मननीय, पठनीय संग्रहणीय और प्रचारणीय है।

बीकानेर
२६ ७-७४

—उपाध्याय, दर्शन सागर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लेखक की प्रकाशित रचनाएँ

१. सुनहरी उक्तियाँ
२. लहरें
३. संबल
४. जवाहरात
५. सारांश
६. दादा चतुष्टयी
७. होमियो महावीर
८. आयुर्वेद महावीर
९. प्राकृतिक महावीर
१०. ज्योतिष महावीर

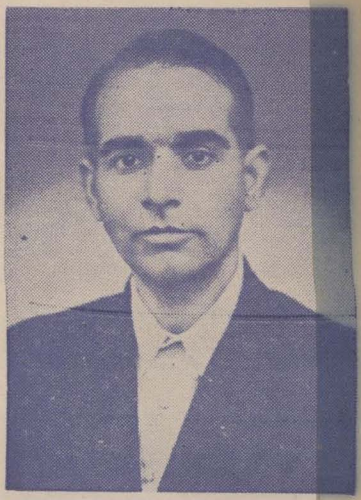

लेखक की सम्पादित रचनाएँ

१.	संगीत भगवान पार्श्वनाथ	उपप्रवर्तक, कविरत्न
२.	" श्री जम्बूकुमार	श्री
३.	" श्री मेघकुमार	चं
४.	" महासती चंदनबाला	द
५.	" महासती मदनरेखा	न
६.	" श्री धन्नाशालिभद्र	मु
७.	" इषुकार कथा	नि
८.	" सती सुर सुन्दरी	पं
९.	" संगीतों की दुनिया	जा
१०.	बारह महीने	बी
११.	विश्व ज्योति महावीर (काव्य)	श्री गणेश मुनि 'शास्त्री'
१२.	श्रमण संस्कृति के २५०० स्वर (दोहे)	मुनि श्री महेन्द्रकुमार 'कमल'
१३.	प्यासे स्वर (कविताएं)	"

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org